'मास्टर' मणिमालायाः ७१ संख्यको मणिः (दर्शनविभागे ३)

❀ श्रीः ❀

श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितः—

तत्त्वबोधः

—:०❀०:—

इति जयपुर-राज्यान्तर्गत–नवलगढ़निवासिना

पण्डितश्रीबैजनाथशर्म्म—कृतया

सरलसोदाहरण–भाषाटीकया

समलङ्कृतः ।

—:❀:—

स च

काशीस्थ–संस्कृत बुकडिपो–इत्यस्याऽध्यक्षैः

मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स इत्येतैः

स्वीये 'मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स' नाम्नि यन्त्रालये

मुद्रापयित्वा प्रकाशितः ।

—:❀:—

मूल्यम् ।-)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकाशकः—
जे० एन० यादव प्रोप्राइटर,
मास्टर खेलाड़ीलाल ऐण्ड सन्स,
संस्कृत बुकडिपो,
कचौड़ीगली, बनारस सिटी।

[अस्य पुनर्मुद्रणाद्यधिकाराः प्रकाशकेन स्वायत्तीकृताः]

मुद्रकः—
श्रीमन्नालाल अभिमन्युः, एम० ए०
मास्टर प्रिण्टिङ्ग वर्क्स,
बुलानाला, बनारस सिटी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

* सच्चिदानन्देश्वराय नमः *

अथ तत्त्वबोधः

भाषाटीकासहितः ।

अत्राऽऽदौ तत्रभवान् श्रीमच्छङ्कराचार्यः शिष्यशिक्षणार्थं वस्तुनिर्देशात्मकं मङ्गलमाचरति—

वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रं नत्वा ज्ञानप्रदं गुरुम्
मुमुक्षूणां हितार्थाय तत्त्वबोधोऽभिधीयते ॥

अन्वयः—वासुदेवेन्द्रयोगीन्द्रम्, ज्ञानप्रदम्, गुरुं च नत्वा, मुमुक्षूणाम् [मोक्षेच्छवतां], हितार्थाय, तत्त्वबोधः, अभिधीयते ।

भाषा—प्रत्येक घट २ में चेतनस्वरूप से निवास करने वाले, ज्ञान के देने वाले, परमश्रेष्ठ योगीराज वासुदेव नामक साक्षात् ब्रह्म रूप गुरु के चरण-कमलों में नमस्कार करके मुमुक्ष यानी संसार बन्धन से मुक्त होने की इच्छा करने वाले के हित के अर्थ तत्त्वबोध (यानी जिसका निरन्तर अभ्यास करने से इस सृष्टि की उत्पत्ति तथा नाश के होने का जो सुख-दुःख उससे सहज में छुटकारा पाकर ब्रह्म स्वरूप हो जाय इस लक्ष्य को लेकर इस ग्रन्थ को) निर्माण करते हैं ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

[ग्रन्थकार की प्रतिज्ञा]

साधनचतुष्टयसम्पन्नाधिकारिणां मोक्षसाधनभूतं तत्त्वविवेकप्रकारं वक्ष्यामः ।

अर्थ---साधन चतुष्टय कहिये मोक्ष के जो साधन चार हैं उनकरके सम्पन्न यानी युक्त जो अधिकारी पुरुष हैं वे ही मोक्ष के साधक होकर तत्त्वविवेक के अधिकारी होते हैं। तत्त्वविवेक अर्थात् आकाश-वायु-अग्नि-जल-पृथ्वी इन पञ्चमहाभूतों के विषय अभिन्नरूप से प्रतीत होने वाला जो ब्रह्म, जगत का उपादान कारण हैं वही तत्त्वों को एकता से तथा माया के सङ्गी होने पर जीव भाव को प्राप्त होता है, उसका तथा पञ्चमहाभूतों का पृथक् ज्ञान जिस रीति के द्वारा हो उस रीति को इस तत्त्वबोध ग्रन्थ में वर्णन करेंगे।

शङ्का—**साधनचतुष्टयं किम् ?**

अर्थ—वह चारों साधन कौन से हैं ?

समाधान—**नित्याऽनित्यवस्तुविवेकः ॥ १ ॥ इहामुत्रार्थफलभोगविरागः ॥ २ ॥ शमादिषट्कसम्पत्तिः ॥ ३ ॥ मुमुक्षुत्वं चेति ॥ ४ ॥**

अर्थ—प्रथम साधन का नाम नित्य और अनित्य वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना है। यह जब पूर्ण सिद्ध हो जाय तब दूसरा साधन करे, यानी इस लोक तथा [illegible]क इन दोनों के बीच जो २ पदार्थ हैं उनके भोगने में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होना दूसरे साधन का कार्य है। अब तीसरे साधन के सिद्ध करने में शम, दम आदि जो छः पदार्थ हैं उनको ठीक सिद्ध करना तीसरा साधन है। जब यह तीनों साधन पूर्ण हो जाँय, तब मोक्ष की इच्छा करना चतुर्थ साधन का नाम है। इनमें एक भी कमजोर होगा तो चतुर्थ साधन सिद्ध न हो सकेगा, जैसा कि व्यासजी ने कहा है कि—"अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" यानी चारों साधनों को पूर्ण करने के पश्चात् ब्रह्मेच्छा करना उचित है।

शङ्का—**नित्याऽनित्यवस्तुविवेकः कः ?**

अर्थ—नित्य और अनित्य वस्तु का पृथक् २ ज्ञान क्या है ?

समाधान—**नित्यवस्त्वेकं ब्रह्म तद्व्यतिरिक्तं सर्वमनित्यम्। अयमेव नित्यानित्यवस्तुविवेकः।**

अर्थः—नित्य अर्थात् तीनों कालों में सत्यस्वरूप रहने वाला केवल ब्रह्म है, उसके अतिरिक्त यह जो स्थावर जङ्गम रूप यावन्मात्र जगत है सो सम्पूर्ण अनित्य हैं यानी समय पाकर सब नष्ट हो जाता है, इसका मतलब यह है कि नित्य से प्रेम करता हुआ अनित्य की जरा भी इच्छा न करना यह प्रथम साधन सम्पूर्ण साधनों की प्राप्ति का मूल कारण है।

अब दूसरे साधन की क्या विधि होगी? इसलिए पुनः पूछते हैं—

शङ्का—**विरागः कः ?**

अर्थः—विराग क्या वस्तु है ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समाधान—**इह स्वर्गभोगेषु इच्छाराहित्यम् ॥ २ ॥**

अर्थः—इह शब्द का अर्थ यह है कि संसार के पदार्थों को इच्छा अथवा इस देह के लिए प्रत्येक वस्तुओं की इच्छा और स्वर्ग के भोगों के लिए अभिलाषारहित होना अर्थात् दोनों लोकों के विषय भोगों की इच्छाओं का त्याग ही विराग है।

जब दोनों साधन तय कर चुके तब तीसरे साधन को पूर्ण करने की इच्छा से पुनः शङ्का करते हैं—

प्रश्न—**शमादिसाधनसम्पत्तिः का ? ॥ ३ ॥**

अर्थः—शम आदि की साधनसम्पत्ति क्या है ?

उ०—**शमदमोपरतितितिक्षा श्रद्धा समाधानं चेति ।**

अर्थः—शम १, दम २, उपरति ३, तितिक्षा ४, श्रद्धा ५ और समाधान ६, ये छः शमादि साधन सम्पत्ति कहलाते हैं।

जब इस प्रकार के छह नाम सुने, तब इच्छा होती है कि इन शब्दों का अर्थ क्या है ? इस गरज से पुनः शङ्काएँ की जाती हैं।

शङ्का—**शमः कः ?**

अर्थः—शम क्या चीज है ?

समाधान—**मनोनिग्रहः ।**

अर्थः—मन को विषय वासनाओं से हटाकर एकाग्र करना इसका नाम शम है। मन को वश करने के उपाय भी हो सकते हैं जब कि उपरोक्त दोनों साधन पक्के हो जाते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जैसे मन में कोई पदार्थ खाने की इच्छा हुई तब पास में खरीदने के निमित्त द्रव्य न लेकर उस मुहल्ले में जाओ जिसमें कि इच्छित पदार्थ मौजूद हों, और उधर से दैनिक आया जाया करो, परन्तु खरीदो मत, फिर आपसे आप उन पदार्थों के खाने की इच्छा के बनिस्बत घृणा होने लगेगी। अगर मनकी तृप्ति के निमित्त पदार्थ खाओगे तो यह तृप्ति अग्नि में घृत का कार्य करेगी। इसलिये वासनाएँ जो मन में आती हैं उन्हें देखे, परन्तु भोगे नहीं, फिर आप से आप मन एकाग्र हो जायगा।

शङ्का—दमः कः ?

अर्थः—दम किसे कहते हैं ?

समाधान—चक्षुरादिबाह्येन्द्रियनिग्रहः।

अर्थः—नेत्र आदि जो बाह्य (बाहर की) ज्ञानेन्द्रियां उनको निग्रह (वश में) करना दम कहलाता है। यह कार्य तभी सम्पन्न हो सकेगा जब कि मनको अपने वश कर चुकेंगे, क्योंकि ये ज्ञानेन्द्रियां बगैर मन की सहायता के किसी विषय भोगों को प्राप्त नहीं कर सकतीं। इसलिये प्रथम साधन को ठीक करके पश्चात् इस दूसरे साधन को पूरा करने की चेष्टा करो।

शङ्का—उपरतिः का ?

अर्थः—उपरति किसे कहते हैं ?

समाधान—स्वधर्मानुष्ठानमेव।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः--स्व कहिये इस देह में निवास करते हुए अपने को पहिचानना ही इस शास्त्र में स्वधर्म है, उसी का अनुष्ठान अर्थात् चेतन साक्षी धर्म की निष्ठा करके शब्द-स्पर्श-आदि सम्पूर्ण विषयों से चित्त की वृत्ति को हटाना अर्थात् आत्मा का विचार करने में लीन होकर सब प्रकार के धर्म, लौकिक व्यवहारों से उदासीन होना, एवं उपरोक्त सम्पूर्ण साधन सिद्ध होने पर सामाजिक धर्म परित्याग करने में पाप का स्पर्श नहीं होता।

शङ्का--तितिक्षा का ?

अर्थः--तितिक्षा क्या है ?

समाधान--शीतोष्णसुखदुःखादिसहिष्णुत्वम् ।

अर्थः--सरदी गरमी, सुख-दुःख तथा आदि शब्द से मान-अपमान, लाभ-अलाभ, जय-पराजय इन सब को समान समझना इसका नाम तितिक्षा है।

अगर एक गरीब मजदूर लोहार की दुकान में दिन भर उष्णता को सहता हुआ तथा कार्य की गलती होने पर अपमान को धैर्य से सहता है, तथा व्यापारी जन लाभ हानि को सहते हैं, शूरवीर लड़ाई में जय-पराजय को सहते हैं, तो क्या ये सम्पूर्णजन भी तितिक्षा के अधिकारी हैं ? तो इतने शब्दों का मूल उत्तर यही है कि उपरोक्त जन मायाश्रित अनित्य पदार्थों के इच्छुक होकर जगह २ उपरोक्त बातों का सामना करते हैं। इस लिये तितिक्षा के अधिकारी नहीं माने जा सकते, तितिक्षा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के अधिकारी वे ही बनेंगे जो कि दोनों साधनों के पश्चात् तीसरे साधन की तीन सीढ़ियों को तय कर चुका है, तथा तय करने में जो उपरोक्त घटनाओं का सामना करता है वह तितिक्षा का अधिकारी है।

शङ्का—**श्रद्धा कीदृशी ?**

अर्थः—श्रद्धा किस प्रकार की होती है ?

समाधान—**गुरुवेदान्तवाक्ये विश्वासः श्रद्धा।**

अर्थः—गुरु और वेदान्त शास्त्र के वाक्यों में विश्वास करना। जो गुरु वेदान्त शास्त्र के वाक्यों का यथार्थ उपदेश करते हैं उन पर विश्वास रखना श्रद्धा है।

शङ्का—**समाधानं किम् ?**

अर्थः—समाधान क्या है ?

समाधान—**चित्तैकाग्रता का ?!**

अर्थः—सावधान होकर निरन्तर एकान्त में निवास कर उपरोक्त गुरु के वेदान्त वाक्यों को ध्यान से सुन कर चित्त की वृत्तियों का दमन कर साक्षात् "अहं ब्रह्म" ऐसा निश्चय करना ही समाधान कहाता है। इस प्रकार से तीसरे साधन की छठी सीढ़ी पारकर चुकने के बाद चतुर्थ साधन में प्रवेश करें।

जब तीनों साधनों को ध्यान से सुन चुके तब चतुर्थ साधन के सुनने की इच्छा से शङ्का करते हैं—

शङ्का—**मुमुक्षुत्वं किम् ?**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः—मुमुक्षुत्व क्या वस्तु है ?

समाधान—**मोक्षो मे भूयादितीच्छा ।**

अर्थः—मोक्ष अर्थात् (निखिलदुःखनिवृत्तिपुरस्सरं स्वात्मानन्दावाप्तिः) यानी सम्पूर्ण मायाश्रित दुःखों से निवृत्ति होकर, निरन्तर आत्मानन्द की प्राप्ति होकर, जन्म-मरणादि रूप जो संसार उससे मेरी मुक्ति हो जाय ऐसी इच्छा का नाम 'मुमुक्षुत्व' है। यह धारणा तभी होनी चाहिए जब कि उपरोक्त तीनों साधनों का कार्य सम्पन्न कर चुका हो। क्योंकि बगैर मार्ग को तय किये किसी स्थान में पहुँचना असम्भव है।

जब चारों साधन मनुष्य तय कर चुकता है तब इस संसार में जो तत्त्व सारांश है उसके जानने का अधिकारी होता है। जैसा कि—

एतत्साधनचतुष्टयम् ।

ततस्तत्त्वविवेकस्याधिकारिणो भवन्ति ।

अर्थः—यह जो हमने ऊपर चार साधन कहे, उन्हें यत्न करके सिद्ध करने के बाद, वह ज्ञानी पुरुष तत्त्व यानी इस संसार में निरंतर रहने वाला निर्मल तथा पञ्चमहाभूतों से अलग जो परमात्मा वह प्रत्येक रचना का करके किस भाँति से असंग रहता है, उस रहस्य के जानने का अधिकारी हो सकेगा।

शंका—**तत्त्वविवेकः कः ?**

अर्थः—तत्त्वविवेक क्या है ?

शंका—**आत्मा सत्यस्तदन्यत्सर्वं मिथ्येति ।**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः—एक आत्मा सत्य है उससे भिन्न जितने भी दृश्या-दृश्य पदार्थ हैं तथा नाम रूपात्मक द्वैत जगत् यह सम्पूर्ण मिथ्या है। यथा—"इदं सर्वं द्वैतजातमद्वितीये चिदानन्दात्मनि मायया कल्पितत्वात् मृषैव आत्मैवैकः परमार्थसत्यः सच्चिदानन्दाद्वयोऽहमस्मीति ज्ञानम्। तथाऽन्यदपि तत्त्वपदार्थयोरभेदगोचरान्तःकरणवृत्तित्वम्।" इस प्रकार का जो निश्चय है वही तत्त्व विवेक है।

अब इस शरीर में आत्मा किसे मानें? क्या आँख-कान-नाक-पैर अथवा-प्राणों को या हृदय को आत्मा मानें? इस प्रकार की शङ्काओं की निवृत्तियों के हेतु शङ्का करते हैं—

शङ्का—**आत्मा कः ?**

अर्थः आत्मा किसे कहते हैं?

समाधान—**स्थूलसूक्ष्मकारणशरीराद्व्यतिरिक्तः पञ्चकोशातीतः सन् अवस्थात्रयसाक्षी सच्चिदानन्दस्वरूपः सन् यस्तिष्ठति स आत्मा।**

अर्थः—जिन इन्द्रियों के आनन्द को आत्मानन्द मान बैठे थे, वे सब भ्रम के कारण थे। आत्मा इन से अलग ही है। जैसे—स्थूल, सूक्ष्म, कारण, शरीर से आत्मा को अलग जानो तथा पञ्चकोशों से भी अलग निवास करने वाला, और तीनों अवस्थाओं का साक्षी तथा सत्-चित्-आनन्द स्वरूप होकर बाहर भीतर निवास करता है वही आत्मा है। जिसे ईश्वर और ब्रह्म भी कहते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उपरोक्त प्रमाण में तो आत्मा का शरीरादि अवयवों से अलग ही निवास कहा। तब पहले शरीर के भेदों को तथा कोशादिकों को जानने की इच्छासे पुनः शंकाएँ की जाती हैं—

शङ्का—**स्थूलशरीरं किम् ?**

अर्थः—स्थूल शरीर किसे कहते हैं ?

समाधान—**पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोगायतनं शरीरम्, अस्ति, जायते, वर्धते, विपरिणमते, अपक्षीयते, विनश्यतीति षड्विकारवदेतत्स्थूलशरीरम् ।**

अर्थः—पञ्चीकृत† अर्थात् पञ्चीकरण किये हुये जो पञ्च महाभूत, तिनसे रचा हुआ। फिर कैसा है कि पुण्य व पाप रूपी कर्मों के साथ उत्पन्न होने वाला तथा उसी पुण्य व पाप रूपी कर्मों के फल, सुख दुःखादिकों के भोगने वाला यह स्थूल शरीर है। और 'अस्ति', कहिये इस समय में मौजूद है। और ('जायते') फिर भी होगा। होकर के यह क्या करता है ? 'वर्धते' दिन रात बढ़ा करता है। बढ़ता हुआ भी विशेषता यह रखता है कि हर समय एक रूप को धारण नहीं करता जैसे बाल्यावस्था में कैसी शक्ल रहती है, पश्चात युवावस्था उससे भिन्न रूप धारण करती है, और वृद्धावस्था इन से भिन्नरूप धारण करती है, यही

† परन्तु यहाँ पर यह शंका हुई होगी कि पञ्चीकरण किसे कहते है ? इस शंका को हम आगे वर्णन करेंगे यहाँ प्रसङ्ग के बाहर की बात होती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं, 'अपक्षीयते', यह स्थूल शरीर रूपी घट प्रतिक्षण क्षीण होता रहता है। और 'विनश्यति', क्षीण होते २ यहाँ तक क्षीण हो जाता है, कि एकदम नष्ट हो जाता है, फिर होकर फिर नष्ट हो जाता है, ऐसा यह षड् (छह) विकार वाला स्थूल शरीर है।

शङ्का—**सूक्ष्मशरीरं किम् ?**

अर्थ:—सूक्ष्म शरीर क्या है ?

समाधान—**अपञ्चीकृतपञ्चमहाभूतैः कृतं सत्कर्मजन्यं सुखदुःखादिभोगसाधनं पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि, पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, पञ्च प्राणादयः, मनश्चैकं, बुद्धिश्चैका एवं सप्तदशकलाभिः सह यस्तिष्ठति तत्सूक्ष्मशरीरम्।**

अर्थ:—अपञ्चीकृत अर्थात् पञ्चीकरण से सम्बन्ध न रखनेवाला और सिर्फ पञ्चमहाभूतों के द्वारा निर्माण किया हुआ, और पुण्य व पाप रूपी कर्मों से उत्पन्न सुख दुःखादि जो भोग उनका साधन मात्र, फिर कैसा है कि इसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। और पाँच प्राण हैं और एक मन है तथा एक बुद्धि इन्द्रिय है इस प्रकार से जो सत्रह कलाओं (मशीनों) के सहित जो स्थित हो वही सूक्ष्म शरीर है, सो यह प्रत्येक देहधारी के अन्दर व्याप्त है।

इसमें जो ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय कही वे कौन सी हैं ? इनक क्या कर्तव्य है ? इसलिये शङ्काएँ करते हैं—

शङ्का—**पञ्चज्ञानेन्द्रियाणि कानि ?**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः—पञ्चज्ञानेन्द्रिय कौन हैं ?

समाधान—श्रोत्रं, त्वक्, चक्षुः, रसना, घ्राणमिति पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि ।

श्रोत्रस्य दिग्देवता, त्वचो वायुः, चक्षुषः सूर्यः, रसनाया वरुणः, घ्राणस्याश्विनाविति ज्ञानेन्द्रियदेवताः ।

श्रोत्रस्य विषयः शब्दग्रहणम्, त्वचो विषयः स्पर्शग्रहणम्, चक्षुषो विषयः रूपग्रहणम्, रसनाया विषयो रसग्रहणम्, घ्राणस्य विषयो गन्धग्रहणमिति ।

अर्थः—श्रोत्र (कान), त्वचा (चमड़ा), नेत्र (आँख), रसना (जिह्वा) और घ्राण (नाक) ये पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं । प्रत्येक देवता का इस शरीर में निवास है—जैसे कानों के देवता दिशाएँ हैं, तथा त्वचा के देव वायु हैं, नेत्रों के देव सूर्य हैं, जिह्वा के देव वरुण हैं, नाक के देव अश्विनीकुमार हैं । अब इनके कर्तव्य वर्णन करते हैं—कानों का कर्तव्य है शब्द का बोध करना, चमड़े का कर्तव्य है कि स्पर्श करना, नेत्र का कार्य रूप को ग्रहण करना, जिह्वा का कार्य खट्टा मिट्ठादि रसों को ग्रहण करना, नाक का कर्तव्य है कि गन्ध को ग्रहण करना, इस प्रकार ज्ञानेन्द्रियों के देवता तथा कर्तव्य वर्णन किया ।

अब इन इन्द्रिय-जगत् का कर्तव्य क्या है ? तथा परस्पर में सम्बन्ध रखकर किस प्रकार अपना साम्राज्य बना रक्खा है उसी विषय पर दृष्टान्त कहते हैं—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उदाहरण—

यह तो आप जानते ही हैं कि ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ही यह शरीर सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तु को प्राप्त करता है परन्तु कैसे करता है ? एक दृष्टान्त है, एक कामी पुरुष बैठा था कि एकाएक किसी तरफ से मधुर छम २ की आवाज़ आई। तब इस शब्द को कानों ने सुनकर नेत्रों से कहा कि इस रूप को जरूर देखना चाहिये। फिर तो नेत्रों से न रहा गया उन्होंने शीघ्र ही कही हुई दिशा की तरफ देखना शुरू किया। जब वह कामिनी नजदीक आ गई तब उस रूप को देख प्रसन्न हुआ। उसी समय नेत्रों ने नाक से कहा कि इसमें कैसी बू है उसने झट से रोग की तरह चिकित्सा कर बतलाया कि अमुक इत्र की खुशबू हैं। फिर तो क्या था, त्वचा ने चाहा कि इसे शीघ्र स्पर्श करना चाहिए। जब स्पर्श कर लिया तब जिह्वेन्द्रिय ने रस ग्रहण करने की इच्छा से उस कामिनी के अधरों में लगा हुआ थूक रूपी रस को ग्रहण कर मन रूपी कामी पुरुष ने अपनी इच्छा पूर्ण की। इसी प्रकार यह परस्पर में कभी कोई आगे आती है, कभी कोई। इसी विषय का और दृष्टान्त कहें तो ग्रन्थ का विस्तार होता है, इस लिये अब आगे का कार्यारम्भ करते हैं।

शङ्का—**कर्मेन्द्रियाणि कानि ?**

समाधान—**वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थानीति पञ्च कर्मेन्द्रियाणि। वाचो देवता वह्निः, हस्तयोरिन्द्रः, पादयोर्विष्णुः, पायोर्मृत्युः, उपस्थस्य प्रजापतिरिति**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कर्मेन्द्रियदेवताः । वाचो विषयो भाषणम्, पाण्योर्विषयो वस्तुग्रहणम्, पादयोर्विषयो गमनम्, पायोर्विषयो मलत्यागः, उपस्थस्य विषय आनन्द इति ।

अर्थः—वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा), उपस्थ (लिङ्ग-भग), यह पाँच कर्मेन्द्रिय हैं। अब इनके देव कहते हैं—वाणी के देव अग्नि हैं, हाथों के देव इन्द्र हैं, पैरों के विष्णु हैं, गुदा के देवता मृत्यु (यमराज) हैं, लिङ्ग के अधिपति ब्रह्मा हैं, ये कर्मेन्द्रियों के देवता हैं। वाणी का कार्य बोलना, हाथों का कर्तव्य वस्तु का ग्रहण करना, पैरों का कर्तव्य चलना, गुदा का कार्य मल का त्याग करना, लिङ्ग का कार्य आनन्द करना (मैथुन से जो ज्ञात होता है) इस प्रकार से कर्मेन्द्रियों के देव तथा उनका कार्य वर्णन किया।

अब इन कर्मेन्द्रियों के देवताओं के होने का कारण कहते हैं। वाणी के देवता अग्नि कहा सो ठीक है क्योंकि वेद में भी कहा है कि "मुखादग्निरजायत" अग्नि का कर्तव्य जलाना है तो वाणी का कार्य भी किसी अशुद्ध कार्य को जलाकर शुद्ध का प्रकाश करना। हाथों का जो इन्द्र कहा सो भी ठीक; क्योंकि जैसे देवों में पराक्रमी इन्द्र है वैसे शरीर में पराक्रमी हाथ हैं। अब पैरों के स्थान में विष्णु का स्थान कहा; क्योंकि विष्णु का कर्तव्य पालन करना है, जो पालन करता है वह सम्पूर्ण दुःखों का सामना करते हुए भी दुःख नहीं मानता, वही हालत पैरों की है कि इस शरीर के सम्पूर्ण बोझ को लादे रहने पर भी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दुःख प्रगट नहीं करते क्योंकि इसमें तो विष्णु का निवास है, इसलिये ब्राह्मणों के चरणों में नमस्कार किया जाता है; एक तो विष्णु का निवास दूसरे ये लोग इन्हीं पैरों से घूम २ कर तीर्थों में भ्रमण कर जनता को धर्म मार्ग की तरफ ले जाते हैं। गुदा के जो मृत्यु (यमराज) कहा सो ठीक है, क्योंकि मृत्यु का कर्तव्य है कि जगत् का संशोधन करना तो गुदा का भी वही कार्य है, याने शरीर की सम्पूर्ण बीमारियों को साफ करते रहना इसके लिए वैद्य-डाक्टरों को पूछो कि अगर दस्त की कब्ज होने लगे तो कौन २ सी बीमारियाँ अपना घर बना लेती हैं इस लिये गुदा का देव मृत्यु ठीक ही है, जैसा देव वैसा पुजारी। तथा जननेन्द्रिय का जो देव ब्रह्मा कहा सो भी ठीक है क्योंकि सृष्टि का कर्ता ब्रह्मा है. तथा ब्रह्मा का निवास कमल पर कहा है। वही हालत लिंगेन्द्रिय की है जब गर्भाशय रूपी कमल पर इसका निवास होता है तो फिर कई रूपों से सृष्टि के करने में समर्थ होता है, जैसे कहा है "प्रजापतिश्चरति गर्भे०" इति श्रुतेश्च।

शङ्का—कारणशरीरं किम् ?

अर्थः—कारण शरीर किसे कहते हैं ?

समाधान—अनिर्वाच्यानाद्यविद्यारूपं शरीरद्वयस्य कारणमात्रं सत् स्वस्वरूपाज्ञानं निर्विकल्परूपं यदस्ति तत्कारणशरीरम्।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः—नहीं हो सकता निर्वाचन जिसका अर्थात् माया को सत्य कहें तो ज्ञान होने के बाद वह नष्ट न होनी चाहिये, अथवा उसे झूठी कहें तो संसार की उत्पत्ति उसके बगैर कैसे हुई? इत्यादि शङ्का होने पर कहते हैं कि जैसे रस्सी अँधेरे में होने से सर्प का भय होता है परन्तु प्रकाश से देखने पर वह सर्प का भय जाता रहता है इसी प्रकार माया भी सत्य तथा मिथ्या रूप केवल अज्ञान रूपी अन्धकार के रहते मायाश्रित मिथ्या जगत सत्य माना जाता है, ज्ञानरूपी प्रकाश होने पर रज्जु रूप कल्पित सर्प का भय जाता रहता, है तथा तत्त्वरूप और स्थूल तथा सूक्ष्म शरीर का कारण मात्र अर्थात् बीज और निज स्वरूप का अज्ञान तथा निर्विकल्प रूप जो है वही कारण शरीर है।

शङ्का—**अवस्था त्रयं किम्?**

अर्थः—तीनों अवस्था कौनसी हैं?

समाधान—**जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थाः।**

अर्थः—जाग्रत् १, स्वप्न २, और सुषुप्ति ३, ये तीन अवस्थाएँ हैं।

शङ्का—**जाग्रदवस्था का?**

अर्थः—जाग्रत अवस्था किसे कहते हैं?

समाधान—**श्रोत्रादिज्ञानेन्द्रियैः शब्दादिविषयैश्च ज्ञायत इति यत्सा जाग्रदवस्था। स्थूलशरीराभिमानी आत्मा विश्व इत्युच्यते।**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अर्थः—कान इत्यादि पूर्वोक्त ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जो शब्द, स्पर्शादि विषयों का भोग भोगा जाता है उसे जाग्रत् अवस्था कहते हैं, तथा स्थूल शरीर का अभिमानी जो आत्मा है वह विश्व कहलाता है, अर्थात् स्थूल भोगों का भोगनेवाला विश्वरूप आत्मा जाग्रत् अवस्था का साक्षी तथा उससे भिन्न है, क्योंकि अवस्था का तो परिवर्तन होता है परन्तु आत्मा निश्चल तथा चेतन रूप नित्य है।

शङ्का—स्वप्नावस्था का ?

अर्थः—स्वप्नावस्था किसे कहते हैं ?

समाधान—जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं तज्जनितवासनया निद्रासमये यः प्रपञ्चः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था। सूक्ष्मशरीराभिमानी आत्मा तैजस इत्युच्यते।

अर्थः—जाग्रत् अवस्था के समय इन्द्रियों की सहायता से जो २ पदार्थ देखे तथा सुने व भोगे हैं उन्हीं की वासना मात्र निद्रा के समय दृष्टिगोचर होती है उसी को स्वप्नावस्था कहते हैं, यह स्वप्नावस्था सूक्ष्म शरीर में होती है, उस सूक्ष्म शरीर का अभिमानी आत्मा तैजस कहलाता है।

शङ्का—अतः सुषुप्त्यवस्था का ?

अर्थः—अच्छा, सुषुप्ति अवस्था किसे कहते हैं ?

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समाधान—अहं किमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयत इति सुषुप्त्यवस्था। कारण-शरीराभिमानी आत्मा प्राज्ञ इत्युच्यते।

अर्थः—मैं कुछ भी नहीं जानता कि कौन हूँ तथा कहाँ पर शयन कर रहा हूँ परन्तु मेरे आश्रित इन्द्रियों के आनन्द (निद्रा) के समय का अनुभव किया इस प्रकार के अनुभव का नाम सुषुप्ति अवस्था है, इस सुषुप्ति अवस्था के समय में कारण शरीर और आनन्द मय कोष के आनन्दानुभव का अभिमानी आत्मा प्राज्ञ कहलाता है, यह प्राज्ञ अपने आनन्द स्वरूप के भान से रहित अज्ञान का साक्षी तथा इन्द्रियों की सहायता के बिना ही अपनी चैतन्य शक्ति द्वारा वासनामय विषयों के जानने तथा भोगने वाला है।

इस प्रकार के वचनों को सुन के, कि मैं कुछ भी नहीं जानता तथा कौन हूँ, कहां सोया तब तो शङ्का हुई होगी कि कहां तो जीव और ईश्वर की एकता और कहां इस प्रकार का अज्ञान। इस द्विविधा स्वरूप वाक्य को नहीं समझे, तो आपको उदाहरण द्वारा समझाते हैं।

(उदाहरण)

जैसे—

एक कमरे में एक प्रकाश की लाइट (बिजली) लगी हुई हो उसमें नीचे की तरफ से ठीक एक लम्बा काला कपड़ा लटका देने पर प्रकाश का दो हिस्सा हो जाता है और कपड़े की जगह

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

काला प्रकाश बन जाता है। यह दृष्टान्त है, इसे दार्ष्टान्त में घटाते हैं, कि कपड़े की परछाईं रहते हुए प्रकाश दो रूप में विभाजित होता है, एक मलिन, एक तेजमय। परन्तु अगर उस कपड़े को हटा दिया जाय तो सर्वत्र तेजमय प्रकाश दृष्टिगोचर होगा। उस हालत में वह प्रकाश दूसरे को नहीं जान सकता, क्योंकि अगर वह मलिन प्रकाश एक तरफ हो तो तेज प्रकाश को बोध होगा कि हम में प्रकाश ज्यादा है उसमें कम। परन्तु एक होने पर उसे अपने के सिवाय दूसरे का बोध हो नहीं सकता, तो याद रहे कि इस संसार में जितने आकार तथा नाम की वस्तुयें हैं, वे सब मायाश्रित हैं इसलिये इस सुषुप्ति अवस्था में कहा कि मैं नहीं जानता कि मैं कौन हूँ क्योंकि यह अवस्था प्राज्ञ (पण्डित) याने निज स्वरूप का ज्ञान प्राप्ति का पूर्ण लक्षण है। अगर ज्ञान होने के पश्चात भी यह कहें कि मैं अमुक हूँ, अमुक स्थान में सोया तो माया का सङ्गी होने का लक्षण बोध होता है। इसलिये कहा कि मैं नहीं जानता कि कौन हूँ।

शङ्का--**पञ्चकोशाः के ?**

अर्थः—पञ्चकोश कौन से हैं ?

समाधान- **अन्नमयः प्राणमयो मनोमयो विज्ञानमय आनन्दमयश्चेति।**

अर्थः—पहले कोश का नाम अन्नमय, दूसरे का प्राणमय, तीसरे का मनोमय, चौथे का विज्ञानमय, पाँचवें का आनन्दमय है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कोशोत्पत्तिकारण ।

जैसे शरीर को प्रथम अन्न चाहिये, अन्न मिलने पर ही प्राण रह सकेंगे, प्राण रहने पर मन हर एक वस्तु का सङ्कल्प विकल्प करता है, उस वस्तु का निश्चय करना विज्ञान का कार्य है, विज्ञान होने पर आनन्द प्राप्त होता है। इसलिये यह पञ्चकोश है ।

शङ्का—अन्नमयः कः ?

अर्थः—अन्नमय कोश किसे कहते हैं ?

समाधान—अन्नरसेनैव भूत्वा अन्नरसेनैव वृद्धिं प्राप्य अनुरूपपृथिव्यां यद्विलीयते तदन्नमयः कोशः स्थूलशरीरम् ।

अर्थः—अन्न के रस से उत्पन्न होकर तथा अन्न के रस से ही वृद्धि को प्राप्त हो पश्चात् वही अन्न दूसरा रूप धारण कर पृथ्वी में लीन हो जाता है, यह क्रिया अन्नमय कोश के द्वारा होती है तथा अन्नमय कोश जिसके आधार हैं उसे स्थूल शरीर कहते हैं ।

शङ्का—प्राणमयः कः ?

अर्थः—प्राणमय किसे कहते हैं ?

समाधान—प्राणादि पञ्च वायवः वागादीन्द्रिय-पञ्चकं प्राणमयः ।

अर्थः—प्राणादि पाँच वायु, (प्राण, अपान, व्यान, उदान,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(समान) और पाँचों कर्मेन्द्रिय मिलकर प्राणमय कोश कहलाता है । और इसे ही क्रिया शक्ति कोश भी कह सकते हो क्योंकि शरीर के अन्दर जितनी क्रियायें होती हैं, वे सम्पूर्ण प्राणमय कोश से ही होती हैं ।

शङ्का—**मनोमयः कोशः कः ?**

अर्थः—मनोमय कोश किसे कहते हैं ?

समाधान—**मनश्च ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं मिलित्वा भवति स मनोमयः कोशः ।**

अर्थः—एक मनेन्द्रिय तथा पाँचों ज्ञानेन्द्रिय मिलकर मनोमय कोश कहलाता है । तथा इसी को इच्छाशक्ति कोश भी कहते हैं ।

शङ्का—**विज्ञानमयः कः ?**

अर्थः—विज्ञानमय किसे कहते हैं ?

समाधान—**बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं मिलित्वा यो भवति स विज्ञानमयः कोशः ।**

अर्थः—एक बुद्धि इन्द्रिय तथा पाँचों कर्ण आदि ज्ञानेन्द्रिय मिलकर विज्ञान मय कोश होता है, यह कोश प्रत्येक प्राणिमात्र को होता है क्योंकि इस विज्ञान मय कोश की सहायता द्वारा ही हम सम्पूर्ण पदार्थों का बोध करते हैं, जैसे विशेष बुद्धि के दौड़ाने पर विशेष बोध होता है और सामान्य दौड़ाने से सामान्य ज्ञान होता है । अगर कुछ भी बुद्धि से कार्य न करे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फिर भी ज्ञान रहता है परन्तु उतना दिव्य ज्ञान नहीं रहता।

शङ्का—**आनन्दमयः कोशः कः ?**

अर्थः—आनन्दमय कोश किसे कहते हैं ?

समाधान—**एवमेव कारणशरीरभूताविद्यास्थमलिनसत्त्वं प्रियादिवृत्तिसहितं सत् आनन्दमयः कोशः।**

अर्थः—इसलिये यह जो कारण शरीर पञ्च महाभूत अविद्या स्वरूप है उसमें स्थित जो प्रियादि वृत्ति मलिन सत्त्व (रजोगुण, तमोगुण) से तिरस्कृत सत्त्वगुण, और प्रिय यानी इच्छानुकूल वस्तु के देखने से उत्पन्न हुआ सुख 'प्रिय' कहलाता है। और इच्छा के अनुसार वस्तु के प्राप्त होने से उत्पन्न हुआ जो सुख है उसे 'मोद' कहते हैं तथा अभीष्ट वस्तु के भोगने से उत्पन्न हुआ जो सुख उसे 'प्रमोद' कहते हैं, इस प्रकार यह कोश अधिक आनन्द का भोग स्थान होने से आनन्दमय कोश कहलाता है।

परन्तु आत्मा माया का सङ्गी होकर इन्हें अपना मान बैठता है इसी से सुख दुःखों को भोगता है पर यह सब आत्मा नहीं, यथा—

एतत्कोशपञ्चकं मदीयं शरीरं मदीयाः प्राणाः, मदीयं मनश्च, मदीया बुद्धिर्मदीयं ज्ञानमिति स्वेनैव ज्ञायते। तद्यथा मदीयत्वेन ज्ञातं कटककुण्डलगृहादिकं स्वस्माद्भिन्नं तथा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पञ्चकोशादिकं मदीयत्वेन ज्ञातमात्मा न भवति ।

अर्थः—हम अज्ञानावस्था में पड़कर भ्रान्ति से अपने को पञ्चकोशादिक रूप मान इस प्रकार व्यवहार करते हैं कि मेरा शरीर है, यह मेरे प्राण हैं, यह मेरा मन है, यह मेरी बुद्धि है, यह मेरा ज्ञान है, परन्तु यह आत्मा पञ्चकोश रूप नहीं है, इस कारण पञ्चकोशादिकों को मेरा है इस तरह न जानना चाहिए क्योंकि जैसे धन-गहने-गृह-स्त्री-पुत्रादि अपने से भिन्न हैं, उसी प्रकार पञ्चकोशादिक आत्मारूप नहीं हैं, किन्तु आत्मा से भिन्न हैं इसलिये इन्हें अपना मानना वृथा है क्योंकि यह तो माया के रचे हुए हैं, समय पाकर नष्ट हो जायँगे परन्तु आत्मा तो नित्य है और माया का साक्षी है ।

शङ्का—आत्मा तर्हि कः ?

अर्थः—तो आत्मा का स्वरूप क्या है ?

समाधान—सच्चिदानन्दस्वरूपः ।

अर्थः—आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है ।

शङ्का—सत्किम् ?

अर्थः—सत् किसे कहते हैं ?

समाधान—कालत्रयेऽपि तिष्ठतीति सत् ।

अर्थः—जो तीनों कालों (भूत-वर्तमान-भविष्य) में निवास करता हुआ एक रस से रहे उसे सत् कहते हैं ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शङ्का--**चित्किम् ?**

अर्थः—चित् किसे कहते हैं ?

समाधान—**ज्ञानस्वरूपः ।**

अर्थः—जो ज्ञानस्वरूप हैं, जैसे घट-पटादि पदार्थों का जानने वाला तथा अपना आधिपत्य जमाने वाला और चैतन्य स्वरूप ऐसा साक्षात् ज्ञान चित् पदार्थ का लक्षण है ।

शङ्का--**आनन्दमयः कः ?**

अर्थः—आनन्दमय किसे कहते हैं ?

समाधान—**सुखस्वरूपः ।**

अर्थः--दुःख रूपी प्रपञ्चों से रहित और सुख स्वरूप जो आनन्द वही ब्रह्म स्वरूप है, यथा--

एवं सच्चिदानन्दस्वरूपं स्वात्मानं विजानीयात् ।

अर्थः—इस प्रकार अपनी आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप जानते हुए सम्पूर्ण नाम रूपात्मक दृश्य जगत की क्रियाओं को मिथ्या जाने ।

अब पूर्वार्द्ध समाप्त होगा इसलिये मध्याह्न की सन्ध्या के अर्थ हम सबों को भगवत्-गान प्रेम से गाना चाहिये ।

गाना

तुम हीं घनश्याम राम, तुम हीं बनवारी ।
तुमहीं हो कच्छ मच्छ, तुमही गिरधारी ॥१॥तुमही०॥
विश्व रूप अपनो जान, अपने में विश्व मान ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तत्त्व पुष्प पंच जान—माया फुलवारी ॥२॥ तुम०
इन्द्रिय दस बखान, पञ्च कर्म पञ्च ज्ञान ।
मस्तक में मन को ठान-बुद्धि बिस्तारी ॥३॥ तुम०
माया सङ्ग जीव होय, जानत है भेद दोय ।
भोगत है कर्म जोय--लिप्सा अति भारी ॥४॥ तुम०
योगी जन करत ध्यान, मुनिना सह करत गान ।
कामिनी की तिरछी तान-छोड़ दे "विहारी" ॥५॥

अब इस विषय को थोड़ी देर के लिये बन्द कर आराम करें, क्योंकि पूर्वार्ध में कई प्रकार की शङ्का समाधान पढ़ते सुनते चित्त ऊब गया होगा, परन्तु इसके उत्तरार्ध में सृष्टि की उत्पत्ति तथा जीवेश्वर का एकत्व होकर भी किस प्रकार भिन्न प्रतीत होता है, तथा माया किसे कहते हैं ? तथा कैसे निर्माण हुई ? तथा शरीर को सुख-दुःख क्यों भोगना पड़ता है ? इत्यादि का उल्लेख होगा इसलिये यहाँ विश्राम करना ठीक है । ॐ शान्तिः ३

इति जयपुरराज्यान्तर्गत-नवलगढ़-निवासि-काशीस्थ-
श्रीचन्द्रमहाविद्यालयसामुद्रिक-शास्त्राध्यापक-
पण्डित-श्रीवैजनाथशर्मकृतसोदाहरण-
सरलार्थ-सहित-तत्त्वबोध-टीकायां
पूर्वार्धः समाप्तः ।

ॐ शान्तिः ३ ।

—:•:—

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अथ तत्त्वबोध उत्तरार्द्धः प्रारम्भः

नृदेहमाद्यं सुलभं सुदुर्लभं
प्लवं सुकल्पं गुरुकर्णधारम् ।
मयानुकूलेन नभस्वतेरितं
पुमान् भवाब्धिं न तरेत्स आत्महा ॥

अर्थः—जो परम दुर्लभ नर देह रूपी दृढ़ नौका को पाकर तथा गुरु रूपी कर्णधार और ईश्वर कृपा रूपी अनुकूल वायु पाकर भी जो प्राणी इस भवसागर से पार न हो, वह आत्म-हत्या का भागी होता है ।

अथ चतुर्विंशतितत्त्वोत्पत्तिप्रकारं वक्ष्यामः ।

अर्थ—अब २४ तत्त्वों के उत्पत्ति का वर्णन करेंगे ।

ब्रह्माश्रया सत्त्वरजस्तमोगुणात्मिका माया अस्ति, तत आकाशः सम्भूतः, आकाशाद्वायुः, वायोस्तेजः, तेजस आपः, अद्भ्यः पृथिवी ।

अर्थः—ब्रह्मा ने सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण-इन तीनों को समान भाग मिलाकर माया को निर्माण किया, पश्चात् आकाश निर्माण किया, आकाश तत्त्व से वायु को और वायु तत्त्व से अग्नि को तथा अग्नि तत्त्व से जल को उत्पन्न किया

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फिर जल से पृथ्वी को निर्माण किया, परन्तु इन सब को अपने आधीन रखा ।

परन्तु सांख्यमतावलम्बी पुरुष इसे (माया को) मूल प्रकृति और अव्याकृत तथा प्रधान भी कहते हैं, जैसा कि कहा है "अदकर्तृसांख्या" जो ईश्वर को अकर्ता कहते हैं पर यह मायाश्रित अज्ञानावस्था का द्योतक है ।

सात्त्विकांशात् पञ्चज्ञानेन्द्रियोत्पत्तिः—

एतेषां पञ्चतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य
सात्त्विकांशाच्छ्रोत्रेन्द्रियं सम्भूतम्,
वायोः सात्त्विकांशात्त्वगिन्द्रियं सम्भूतम्,
अग्नेः सात्त्विकांशाच्चक्षुरिन्द्रियं सम्भूतम्,
जलस्य सात्त्विकांशाद्रसनेन्द्रियं सम्भूतम्,
पृथिव्याः सात्त्विकांशात् घ्राणेन्द्रियं सम्भूतम्,
एतेषां पञ्चतत्त्वानां समष्टि सात्त्विकांशा-
न्मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तान्तःकरणानि सम्भूतानि ।

अर्थ—इन पाँचों तत्त्वों के मध्य से प्रथम आकाश तत्त्व के सात्त्विक अंश से कान इन्द्रिय की उत्पत्ति हुई, पश्चात् वायु तत्त्व के सात्त्विक अंश से त्वचा (चमड़ा) इन्द्रिय की उत्पत्ति हुई, अग्नि तत्त्व के सात्त्विक अंश से रसना (जीभ) इन्द्रिय की उत्पत्ति हुई, पश्चात् पृथिवी तत्त्व के सात्त्विक अंश से घ्राण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

(नाक) इन्द्रिय की उत्पत्ति हुई, जब इन पाँचों तत्त्वों के सात्त्विक अंश से पृथक् २ कर्म करने वाली पाँच ज्ञानेन्द्रिय निर्माण कर चुके तब इन पाँचों तत्त्वों के सात्त्विक अंशों को इकट्ठा किया तब मन, बुद्धि, अहङ्कार, चित्त और अन्तःकरण की उत्पत्ति हुई। आप पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के तो कार्य जानते ही हैं परन्तु यहाँ सात्त्विक अंश से मन-बुद्धि-अहङ्कार-चित्त और अन्तःकरण उत्पन्न हुये इनके कार्य क्या हैं तथा कौन २ देवता हैं, उनको प्रथम वर्णन करते हैं।

सङ्कल्प-विकल्पात्मकं मनः, निश्चयात्मिका बुद्धिः, अहंकर्ता अहंकारः, चिन्तनकर्तृ चित्तम्, मनसो देवता चन्द्रमाः, बुद्धेर्ब्रह्मा, अहङ्कारस्य रुद्रः, चित्तस्य वासुदेवः।

अर्थः—सङ्कल्प, विकल्प (करूँ या न करूँ, जाऊँ कि न जाऊँ) इत्यादि कार्य मन के द्वारा ही उत्पन्न होते हैं, परन्तु बुद्धि इन्द्रिय द्वारा यह कार्य जरूर करना चाहिये ऐसा निश्चय होता है, और मैं हूँ, यह मैंने बताया, मेरा है ऐसा ज्ञान का नाम अहङ्कार है, तथा प्रत्येक वस्तु को स्मरण (याद) करने वाला चित्त है, अब इनके देवता वर्णन किये जाते हैं कि मन इन्द्रिय का देव चन्द्रमा है, बुद्धि इन्द्रिय का देव ब्रह्मा है, अहङ्कार इन्द्रिय का देव रुद्र (महादेव) हैं, और चित्त इन्द्रिय का देव वासुदेव (विष्णु) हैं। इस प्रकार आकाशादि पञ्च भूतों

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के सात्त्विक अंशों से पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ तथा मनादि चार अन्तःकरण की वृत्तियाँ यह ९ नौ पदार्थ उत्पन्न हुये।

राजसांशात् पञ्च कर्मेन्द्रियोत्पत्तिः।

एतेषां पञ्चतत्त्वानां मध्ये आकाशस्य राजसांशात् वागिन्द्रियं सम्भूतम्।
वायोः राजसांशात् पाणीन्द्रियं सम्भूतम्,
वह्नेः राजसांशात् पादेन्द्रियं सम्भूतम्॥
जलस्य राजसांशात् उपस्थेन्द्रियं सम्भूतम्।
पृथिव्या राजसांशात् गुदेन्द्रियं सम्भूतम्॥
एतेषां समष्टिराजसांशात् पञ्चप्राणाः सम्भूताः।

अर्थः—इन पाँचों तत्त्वों के बीच से प्रथम आकाश के राजस (रजोगुण) अंश से वाक् (वाणी) इन्द्रिय उत्पन्न हुई, पश्चात् वायु तत्त्व के रजोगुण से हाथ उत्पन्न हुये फिर अग्नि तत्त्व के रजोगुण से पैर उत्पन्न हुए और जल तत्त्व के राजस अंश से जननेन्द्रिय उत्पन्न हुई, पश्चात् पृथिवी तत्त्व के राजस अंश से गुदेन्द्रिय उत्पन्न हुई इसके बाद इन पांचों तत्त्वों के रजोगुणों को मिलाया तब पांचो प्राणों की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार पांच कर्मेन्द्रिय और पांच प्राणों को मिलाया, तब १० दश तत्व पञ्चमहाभूतों के राजस अंश से उत्पन्न हुए। सात्त्विक अंश के ९ और राजस अंश के १० इन दोनों का योग १९ उन्नीस तत्त्वों की उत्पत्ति हुई।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हमने पूर्वार्ध में कहा था कि पञ्चीकरण आगे कहेंगे सो यहाँ वर्णन करते हैं—

एतेषां पञ्चतत्त्वानां तामसांशात्
पञ्चीकृत-पञ्चतत्त्वानि भवन्ति ।

अर्थ—इन पांचों तत्त्वों के तामस (तमोगुण) अंश से पञ्चीकृत अर्थात् पञ्चीकरण किये हुए पञ्चमहाभूत उत्पन्न हुए ।

शङ्का—**पञ्चीकरणं कथमिति चेत् ?**

अर्थ—यदि आप कहो कि पञ्चीकरण किसे कहते हैं ?

समाधान—**एतेषां पञ्चमहाभूतानां तामसांशस्वरूपमेकैकं भूतं द्विधा विभज्य एकमेकमर्द्धं पृथक् तूष्णीं व्यवस्थाप्याऽपरमपरमर्द्धं चतुर्धा विभज्य स्वार्धमन्येष्वर्धेषु स्वभागचतुष्टयसंयोजनं कार्यं, तदा पञ्चीकरणं भवति । एतेभ्यः पञ्चीकृतपञ्चमहाभूतेभ्यः स्थूलशरीरं भवति, एवं पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यं सम्भूतम् ॥**

अर्थ—तो यह जो पञ्चमहाभूत हैं इनके तमास (तमोगुण) अंश को निकाल पृथक् २ स्थापना करे पश्चात् इनके आधे २ टुकड़े कर अलग २ रक्खे, और एक तरफ इन आधे किये हुये

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टुकड़ों में से एक एक टुकड़े के चार २ हिस्से करके रक्खे और एक टुकड़े को साबुत रहने दे, फिर जो साबुत टुकड़ा है उसमें अपने से अन्य तत्त्वों के आधे के चार २ जो टुकड़े किये थे उनमें से एक टुकड़ा और एक वह टुकड़ा जो पञ्चतत्त्वों के तमोगुण के आधे कर रक्खे थे, इन दोनों को मिलाने से पञ्चीकरण होता है, अर्थात् इस पञ्चीकरण के करने में एक एक महाभूत का अपना आधा भाग और आधे में अपने से अन्य चारों भूतों के चार भाग मिलाने पर पञ्चीकरण होता है।

इस विषय को लेकर श्री व्यासजी ने भी कहा है कि—"वैशेष्यात्तु तद्वादस्तद्वादः" यानी प्रत्येक महाभूत की अधिकता से यह पृथिवी जल-अग्नि-वायु-आकाशादि का व्यवहार होता है, और इन्हीं पञ्चमहाभूतों के पञ्चीकरण से स्थूल शरीर बनता है, इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति होती है, यानी आप जो समझते हैं कि इस शरीर के अलावा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति में बहुत विलम्ब तथा कठिनता पड़ी होगी, सो नहीं है जिस प्रकार पञ्च महाभूतों से पिण्ड उत्पन्न होता है उसी प्रकार ब्रह्माण्ड भी उत्पन्न होता है, इस कारण पिण्ड (शरीर) ब्रह्माड (सम्पूर्ण विश्व) की एकता जानो। यथा—

स्थूलशरीराभिमानी जीवनामकं ब्रह्म प्रतिबिम्बं भवति, स एव जीवः प्रकृत्या स्वस्मादीश्वरभिन्नत्वेन

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जानाति, अविद्योपाधिः सन् आत्मा जीव इत्युच्यते ।

अर्थः—इस स्थूल शरीर का अभिमानी जो जीव है वह ब्रह्म का प्रतिबिम्ब है, आप कहो कि प्रतिबिम्ब किसे कहते हैं ? तो सुनो "तदधीनत्वे सति तत्सदृशत्वम् ?" और भी कहा है कि उपा-(धिनिमित्तस्वप्रतियोगिकव्याप्यवृत्तिभेदकत्वे सत्युपाधिपरिच्छिन्नत्वम्)—ध्यन्तर्गतत्वे सति औपाधिकपरिच्छेदशून्यत्वे सति बहिःस्थितस्वरूपकत्वम् । घटाकाशादिवारणाय द्वितीयम्, दर्पणाद्यन्तर्गततदवयववारणाय तृतीयमिति रत्नावल्याम् ।

प्रतिबिम्ब उसे कहते हैं जो एक ही रूप से दो का बोध हो । जैसे सूर्य को दर्पण में देखने पर दूसरे का बोध होता है परन्तु सूर्य एक ही है, इसी प्रकार ब्रह्म भी पिण्ड (शरीर) में निवास करता हुआ प्रकृति कहिये अपने स्वभाव से ब्रह्म का भिन्न रूप जानता है और वही आत्मा अविद्या रूप उपाधि करके जीव कहलाता है ।

उदाहरण—

जैसे—एक दीपक और एक घड़ा लाओ । पश्चात् दीये को जलाकर ऊपर उस घड़े को औंधा रख उसके चारों तरफ पाँच छेद करके देखो एक दीपक का प्रकाश पाँच भागों में बँटकर अलग २ प्रकाश करता है, अगर उस घोड़े को दीपक के ऊपर से हटा लिया जाय तो वह प्रकाश जो पांच हिस्सों में प्रकाश करता था वह बिम्बभूत होकर घट

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri